द्वितीय अध्याय

शिवानी की कहानियों का संक्षिप्त परिचय

द्वितीय अध्याय

शिवानी की कहानियों का संक्षिप्त परिचय

१ मेरे शोध प्रबन्ध का विषय ' शिवानी की कहानियों में नायिकाओं का स्वरूप ' होने के कारण प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत शिवानी की कहानियों में नायिकाओं का स्वरूप स्पष्ट कराने के लिए एवं उनकी समस्याओं का परिचय कराने के लिए हर कहानी का जितना संक्षिप्त परिचय आवश्यक हैं उतना ही परिचय इस अध्याय के अंतर्गत प्रस्तुत करने का मैंने यत्न किया हैं ।

२ शिवानी की कहानियाँ कुछ अपवाद छोडकर (मेरी प्रिय कहानियाँ, पुष्पहार) अलग-रूप से ' कहानी-संग्रहों ' में प्रकाशित नहीं हुई हैं । जिन ' पुस्तकों ' में ये कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं उनमें ' एक दीर्घ अथवा दो लघु उपन्यासों के साथ कुछ कहानियाँ ' इस रूप से प्रकाशित हुई हैं । अत: इन पुस्तकों पर ' उपन्यास तथा कहानियाँ ' ऐसा उल्लेख दृष्टिगोचर होता हैं । जैसे - गैंडा, कैंजा, किशनुली, कृष्णवेणी, मणिक आदि । इनमें उपन्यासों के साथ कहानियाँ भी हैं अत: इन्हें सुविधा के लिए ' कहानी-संग्रह ' के रूप में ही मैंने स्वीकृत किया किया हैं, बशर्ते इन पुस्तकों के शीर्षकों की इनमें कहानियाँ दिखाई नहीं देंगी, चूँकि ये शीर्षक तो उपन्यासों के ही हैं ।

३ इन कहानियों में से कुछ कहानियाँ दो अलग-अलग पुस्तकों में प्रकाशित हुई हैं, जैसे ` पुष्पहार ` कहानी मेरी प्रिय कहानियाँ, पुष्पहार, तथा विषकन्या इन पुस्तकों में प्रकाशित हुई हैं । अत: ऐसी कहानियों का परिचय प्रथम प्राप्त पुस्तक के अंतर्गत कराया गया हैं । दूसरी पुस्तक में जहाँ ऐसी कहानी प्राप्त हुई है वहाँ उसका बस नामोल्लेख मात्र किया हैं ।

४ अपराधिनी, गैंडा, कैंजा, किशनुली, कृष्णावेणी, माणिक, मेरी प्रिय कहानियाँ, पूतोंवाली, पुष्पहार, रथ्या, रतिविलाप, विषकन्या और स्वयंसिध्दा इन १३ पुस्तकों में कुल मिलाकर शिवानी की ५८ कहानियाँ प्राप्त हुई हैं, जिनका परिचय प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैंने कराया हैं ।

इनके अतिरिक्त, लाल हवेली, उपहार तथा वातायनी इन पुस्तकों में भी शिवानी की कुछ कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं ।

५ ` अपराधिनी ` इस पुस्तक में संस्मरणों का संग्रह हैं । किन्तु इस पुस्तक से पृष्ठ क्रमांक ४ पर अपराधिनी (उपन्यास) लिखा हुआ हैं, तो भूमिका में स्वयं लेखिकाने पृष्ठ क्रमांक ५ पर ` संग्रह ` तथा पृष्ठ क्रमांक १५ पर ` संस्मरण ` शब्द का प्रयोग किया हैं । वस्तुत: ` अपराधिनी ` यह अपराधग्रस्त नारियों की विवशताओं की मर्मस्पर्शी गाथाओं का एक संग्रह हैं । अत: इन्हें संस्मरणात्मक कहानियों के रूप में स्वीकृत करना मुझे अनुचित नहीं लगता हैं ।

(१) कहानी संग्रह -- अपराधिनी

कुल कहानियाँ - ५

१. जा रे एकाकी २. छि: मम्मी तुम गंदी हो ३. साधो ई मुर्दन कै गाँव ४. अलख माई ।

१) जा रे एकाकी --

लखनऊ शहर । स्नेही पाठिकाओं से लेखिका को निमंत्रण । एक निमंत्रण समाज के समृध्द वर्ग से । दूसरा जेल में बंद बंदीनी महिलाओं से । लेखिका जेल के आतिथ्य से विभोर हो उठती हैं । जेल में प्राप्त भोजन से लेखिका को विश्वास नहीं होता कि जघन्य अपराधों में सजा प्राप्त महिला बंदिनियों ने ये पक्वान्न बनाये हैं । इस शीर्षक के अंतर्गत हीरा और चनुली की कहानी हैं । हीरा जो वर्षों पूर्व अपनी बालिका पुत्र-वधू को उसी के पति की सहायता से जिंदा जला चुकी अब वह इस बंदीगृह में सजा काट रही हैं । इसी शीर्षक के अंतर्गत दूसरी कहानी चनुली की हैं । चनुली का पति सेना में हैं । चूँकि चनुली के पति ने अपनी माँ की इच्छा के विरुध्द चनुली से विवाह किया हैं, माँ उस पर नाराज हैं । अत: आए दिन गृहकलह । इसी बीच चीनी युध्द उसके पति को बुला भेजता हैं । वह लडाई पर जाता हैं पर लौटता नहीं । कर्कशा सास चनुली पर तोप बनकर बरसने लगती हैं । चनुली की एक प्रतिवेशिनी (पडोसन) उसकी सास के तोपखाने के लिए नित्य बारूद जुटाती हैं । प्रतिवेशिनी द्वारा अपने सुहाग को दी गई गाली वह बरदाश्त नहीं कर पाती और उसके हाथों प्रतिवेशिनी की हत्या हो जाती हैं । इस अपराध में वह सजा काट रही हैं । परंतु सजा खत्म होने से पहले ही पति द्वारा दूसरी शादी रचने का समाचार पाकर वह परम दु:खी हो जाती हैं ।

२) छि: मम्मी तुम गंदी हो --

यह एक अनमेल विवाह की समस्या पर आधारित कहानी हैं । इक्कीस वर्ष के उम्र की जानकी अपने सोलह वर्ष के प्रेमी की सहायता से अपने पति की हत्या कर डालती हैं । तीन बच्चों की माँ होते हुए भी वह ऐसा कृत्य करती हैं । अडतालीस वर्षीय पति का शंकालु स्वभाव और हमेशा लडाई-झगडे पर उतरने की उसकी आदत से तंग आती हैं जानकी । इसी दरम्यान उसे एक हमदर्दी का मिलना उसकी सेक्स की पूर्ति का कारण बन जाता हैं और उसमें प्यार

के लिए मरने मारने की वृत्ति तैयार होती है । रात्रि की बेला में उसका प्रेमी उसके पति की हत्या कर देता है और कहता है -- " रोती क्यों हो, तुम्हारे दुखों का तो मैं अन्त कर दिया । " पति की हत्या होते ही जानकी की बडी बेटी जाग जाती है । रसोई घर में पराये मर्द को देखकर उसके बारे में जब वह अपनी माँ से पूछती है .... तो जानकी कहती है .... ` तुम्हारे अंकलजी है । ` तब उसकी बेटी उससे कहती है ` नहीं मेरे अंकल नहीं है, तुम गंदी हो म्मी । `

३) साधो ई मुर्दन कै गाँव --

स्त्रियों का गहनों के प्रति मोह और आकर्षण सर्व परिचित है । वह एक ऐसे डकैत की प्रियतमा है जिसके आतंक ने सैकडों गाँवों को थर्रा दिया था । वह दस्यू दल की पटरानी बनती है और नित्य नवीन आभूषणों से जगमाती रहती है । गहनों की हवस के कारण ही दोनों पति-पत्नी पकडे जाते है । दोनों को सजा होती है । इस शीर्षक के अंतर्गत और एक कहानी है मम्मी की । अपने जीजाजी द्वारा मग्गी का कौमार्य भंग हो जाता है । जीजासे मिलकर वह लोगों को ठगने लगती है । जीजा की मदद से वह विवाहों पर विवाह करती है । आखिर वह पकडी जाती है । सजा तो काट रही है । पर मग्गी का यह पंद्रहवाँ पति जो एक लोहार है उसने उसे माफ कर दिया है और घर बसाने का एक और मौका दिया है । ` मुर्दन कै गाँव ` कारागृह के लिए कहा गया है ।

४) अलख माई --

इस कहानी में भी दो कहानियाँ है । एक की नायिका लछमी (लक्ष्मी) उर्फ वैष्णवी उर्फ माई है । कुरूप स्त्री को ससुराल में जो दुःख झेलने पडते है उसकी यह कहानी है । इसमें एक पारिवारिक समस्या है । लछमी के लिए पति और सास द्वारा की गई अवहेलना डाँट, गालियाँ मार सहन करना मुश्किल हो जाता है, जिससे लछमी के हाथों सास और पति की हत्या हो जाती है । किसी भी अदालत में उसे सजा नहीं होती परंतु वह स्वयं ईश्वर की अदालत में विश्वास करती है और स्वयं अपने आप सजा भुगत रही है उसके गुरू का कहना है -- ` पाप किया है,

परिस्थित कर । ` आगे चलकर लेखिका ने इसी नायिका पर आधारित ` चाँदह फेरे ` नाम का उपन्यास लिखा है ।

` अलख माई ` शीर्षक के अंतर्गत ` रजुला ` की ही कहानी है । देवदासी (नरेण की प्रभु की दासी) ` रजुला ` का संबंध गाँव के एक पूजनीय व्यक्ति से आ जाता है जिससे उसे एक पुत्र प्राप्त होता है । पिता जैसा हू-बू-हू चेहरा उस नवजात का देखकर वह उसकी हत्या कर देती है ताकि आगे चलकर वह अपने पिता के लिए कलंक न होवे क्योंकि रजुला का उस व्यक्ति से अवैध संबंध था ।

५) चांद --

वेश्या मनोवृत्ति की चाँद सेक्स की शिकार है । वह जहाँ जाती है, अपने उन्मादक सौन्दर्य का प्रदर्शन कर पुरुषों को शिकार बनाती है । उसके चाहनेवालों में आईस्क्रिम बेचनेवाले, रिक्शावाले से कर्नल सोनी तक सभी तरह के लोग है । लेखिका मजाक में अपनी सहेली मानवी के घर उसे नौकरानी रखने का प्रस्ताव रखती है । चाँद पर जरूरत से ज्यादा विश्वास करने के कारण मानवी की पहले से ही असफल गृहस्थी पूर्ण विराम तक पहुँच जाती है ।

(२) कहानी संग्रह - गेंडा
कुल कहानियाँ - ४
१) भीलनी २) चलोगी चन्द्रिका ?
३) दण्ड ४) मन का प्रहरी ।

(१) भीलनी --

भीलनी कहानी कुमारिकाओं की उम्र की समस्या, कुरूपता की समस्या, सौंदर्य की समस्या और अवैध मातृत्व की समस्या आदि विविध

समस्याओं को लेकर उपस्थित होती हैं । प्रस्तुत कहानी दो अभागिन बहनों की कहानी है । बडी बहन सुहासिनी कुरूप है तो छोटी विलासिनी अत्यन्त सुन्दर । कुरूपता के कारण बडी बहन को कोई पसन्द नहीं कर रहा है । इससे छोटी बहन विलासिनी ऊब जाती है । आखिरकार सुहासिनी का विवाह हो ही जाता है । यहाँ स्त्री की कुरूपता के साथ स्त्री की सुन्दरता भी समस्या बन जाती है । उम्र के साथ सेक्स की समस्या भी गम्भीर बन जाती है । विलासिनी के सौन्दर्य पर सुहासिनी का पति रीझ जाता है । जो नहीं होना चाहिए वह हो जाता है । सुहासिनी अपने पति और बहन को जिस अवस्था में देखती है उसके होश उड जाते हैं । रिवाल्वर से वह बहन को निशाना बनाना चाहती है परंतु गोली उसके पति को लग जाती है अंत में वह स्वयं भी आत्महत्या कर लेती है । कहानी यही खत्म नहीं होती विलासिनी को इससे अवैध मातृत्व प्राप्त होता है । वह अपने आप को समाज को मुँह दिखाने के काबिल नहीं समझाती है और अपनी बेटी को लेकर नौकरी करने काबूल जाने का निश्चय कर लेती है ।

(२) चलोगी चन्द्रिका ?

प्रेम का महल जिस सुन्दरता की नींव पर खडा होता है वही नींव यदि कमजोर हो जाती है तो सारा महल हिलने लगता है, अपनी युवावस्था में चन्द्रवल्लभ चन्द्रिका के बाह्य-सौन्दर्य से इतना आकर्षित हो जाता है कि एक पल भी वह उसके बिना अलग नहीं रह सकता । विवाह यदि करूँगा तो उसीके साथ, ऐसा उसका प्रण था । परंतु व्यवहार कुशल पिता अपनी बेटी चन्द्रिका को आर्थिक दृष्टि से समृध्द ऐसे सदानंद के हाथों में सौंप देता है । चन्द्रवल्लभ अविवाहित ही रह जाता है । उसके जीवन में बहुत चढाव-उतार आते हैं । समय गुजर जाता है । चन्द्रिका के पति सदानन्द की मौत होती है । चंद्रिका अकेली रह जाती है । चन्द्रवल्लभ दुबारा `चलोगी चन्द्रिका ?` का राग आलापना चाहता है । वह बरसों बाद उसे मिलने आ जाता है - चन्द्रिका को अपने साथ ले जाने के लिए ।परंतु जब वह अपने पुराने संकेत स्थल पर आयी हुई चन्द्रिका को छिपकर देखता है तो

उसका बदला हुआ रूप देखकर चन्द्रवल्लभ उसके सामने आनेका साहस नहीं कर पाता । आज उसे पहली बार लगता है कि उसने चन्द्रिका को हमेशा हमेशा के लिए खो दिया है, क्योंकि आज तक जो दिव्यमूर्ति, प्रेयसी-रूप में किसी ताबूत में सुरक्षित शव की भाँति उसके हृदय में ज्यों की त्यों धरी थी, वह किन्हीं अज्ञात विकार के कीटाणुओं के संसर्ग में सहसा क्षयग्रस्त हो बीभत्स बन गई थी ।

(३) दण्ड --

नारी के समर्पण की पहाड के निर्व्याज प्रेम की ओर पढे लिखे लोगों के स्वार्थी प्रेम की यह कहानी है । संथाल की षोडशवर्षीय `चांदमनी` चौबीसवर्षीय `मि. सिंह` को उसकी डॉक्टरी की छात्रदशा में अपना सर्वस्व समर्पित करती है । परंतु जब कुमारिका चांदमनी पेट से रह जाती है तो मि. सिंह उसकी जिम्मेदारी टाल देता है । वह चांदमनी के पिता को कुछ रुपया थामकर स्वयं वहाँ से चला जाता है । पीछे मुडकर भी नहीं देखता । पढाई खत्म करके वह शहर का नामी डॉक्टर बन जाता है । उसका विवाह हो जाता है । समयोपरान्त उसका बेटा `मृत्युंजय` भी डॉक्टर बन जाता है । मृत्युंजय चौबीस वर्ष की उम्र में इस दुनिया से चल बसता है, तब यह दण्ड उसे चांदमनी से की गई बेवफाई का लगता है । चांदमनी की याद अब उसे बहुत सताने लगती है । वह उसका पता ढूँढता हुआ उसके घर तक पहुँचता है । तब वहाँ चांदमनी के घर लोग उसे मातम मनाते नजर आते हैं । चांदमनी का बेटा `बलाई` अपने जनक अर्थात् मि. सिंह के देखे बिना ही इस दुनिया से बिदा लेता है ।

(४) मन का प्रहरी --

४५ वर्षीय अंग्रेजी की प्राध्यापिका `अनुराधा पटेल` अपने ही एक मेधावी छात्र १८ वर्षीय `प्रियतम महंती` से विवाह करके अपने प्रेमी के साथ भारत छोडकर विदेशों में उडनछू होती है । वहाँ वह अपने वर्षों से दबे अरमान पूरे कर लेती है । परंतु इसी विश्वव्यापी हनीमून के बीच एक दिन उसे अपना पुराना

प्रेमी ` मधुकर ` मिल जाता हैं । वह उसकी तरफ इतनी आकृष्ट हो जाती हैं कि अपने पति ` प्रियतम महंती ` को भी छोड देती हैं । लेखिका का अपने मन के प्रहरी से विश्वास उड जाता हैं क्योंकि अनु पटेल को उसका मन संतनी कहता था । वह किसी का अनिष्ट कर ही नहीं सकती ऐसा उसका विश्वास था । वह विश्वास उठ जाता हैं । इसलिए अनुराधा पटेल के पति ` प्रियतम महंती ` के बैरागी रूप से और उसकी दर्दभरी कहानी से भी उसका दिल नहीं पसीजता ।

(३) कहानी संग्रह - कैंवा

कुल कहानियाँ - १०

१. ज्यूडिथ से जयन्ती २. तुलादान ३. भिक्षुणी
४. मामाजी ५. अनाथ ६. भूल ७. सती
८. मौसी ९. मसीहा और १०. बन्द घडी ।

१- ज्यूडिथ से जयन्ती ---

एक सहनशील नारी के त्यागमय जीवन की यह कथा हैं । ` रमा ` दी `, लेखिका के दूर के रिश्ते के ताऊ की सबसे छोटी पुत्री का नाम हैं, जो इस कहानी की नायिका हैं । बचपन में ही रमा दी के कंधों पर पिता की गृहस्थी का बोझ पडता हैं । विवाह एक दुहेजू के साथ होता हैं जो अपनी प्रथम पत्नी की स्मृतियों में अभी तक डूबा हैं । रमादी के साथ कभी अच्छा बर्ताव नहीं करता हैं एक पुत्र की भिक्षा झोली में डालकर मर जाता हैं । पुत्र को इंजीनियर बनाती हैं । पुत्र विदेश से ` ज्यूडिथ ` नाम की बहू लाता हैं । यहाँ आकर उसकी बहू ` जयंती ` नाम धारण तो करती हैं परंतु अपनी सास को नितांत अपमानित करती हैं । इस तरह आरम्भ से लेकर अंत तक रमा दी का जीवन शुष्क और काँटों से भरा हुआ हैं ।

२- तुलादान --

समाज की दृष्टि से पतिता परंतु अपने प्रेमी से एकनिष्ठ ` रोजी ` की यह दर्दनाक कहानी हैं । रोजी अल्मोडा के एक ईसाई परिवार की अनाथ

लडकी । ` ऐनी ` और ` रेचल ` आंटी के कारण घर में बडे बडे अफसरों का आना - जाना । सोलह वर्षीय निहायत सुंदर रोजी के जीवन में प्रथम और अंतिम बार प्रेमी बनकर एक भारतीय आई.सी.एस.अफसर आ जाता है । यह वार्ता साहब के पत्नी तक पहुँच जाती है । हमेशा की तरह रोजी और उसका प्रेमी मिडनाइट पिकनिक पर ` कलमटिया ` निकल जाते हैं । साहब के शक्की पत्नी को जाने कौन कह देता है, वह भी वहाँ पहुँच जाती है । चट्टान पर खडे दो प्रेमियों में से अपने पति को वह अपनी तरफ खींच रोजी को नीचे धकेल देती है ।

रोजी हमेशा के लिए अपाहिज बन जाती है । उसका प्रेमी दुबारा उसे मिलने की कोशिश भी नहीं करता । वह राजनीति में प्रवेश करके एक बडा नेता बन जाता है । ऐसे पाखंडी के साठवीं वर्षा गांठ के अभिनंदन में जनता उसकी स्वर्णतुला करती है । लेखिका के मन में प्रश्न उठता है कि पच्चीस वर्षा पूर्व उसी समाज की दृष्टि से पतिता होकर जिसने अपना सर्वस्व जीवनतुला में रखकर तौल दिया था क्या उस तुलादान की स्मृति भी उसे विभोर करती होगी ?

३ - भिक्षुणी --

पारिवारिक समस्या की शिकार ` किकी ` की यह कहानी है ।

किकी का पति पाँच बहनों का इकलौता भाई है । चार ननदे तो दूर दूर ब्याही थीं, परंतु उसकी छोटी अविवाहिता ननद पास ही शहर में डॉक्टरिन थी । आज तक उस डॉक्टरिन को अपनी शिक्षा, रुचि और चेहरे पर गर्व था । किन्तु ` किकी ` के आकर्षक व्यक्तित्व के सम्मुख वह एकदम फिकी पडकर रह गई थी । किकी अपनी इस ननद के कारण त्रस्त थी । सास भी ननद का ही पक्ष लेती थी । किकी अपने हठी स्वभाव के कारण सबकुछ त्याग देती है और अपने पहले प्रेमी के पास चली जाती है । कुछ ही दिनों में वह प्रेमी किकी की लाश समझाकर किसी और की लाश को किकी के पिताजी के हवाले कर देता है । सब लोग समझने लगते है कि ` किकी ` अब इस दुनिया में नहीं है किन्तु संयोगवश एक दिन लेखिका को हो वह तिब्बती भिक्षुणियों में नजर आती है । संयम के अभाव में पति, पति-गृह और पिता का कुल वह कलंकित कर देती है ।

४ - मामाजी --

यह कहानी एक महत्वाकांक्षी नारी की कहानी है । रोहिणी एक गरीब पुरोहित घर की बेटी, उच्चपदस्थ अफसर राजेंद्र की पत्नी बन जाने के बाद अपने पागल और अकर्मण्य जुडवा भाई को झूठी शान और शौकत के कारण भाई मानने से इन्कार कर देती है । संक्षेप में स्वार्थ और महत्वाकांक्षा के सामने लोग अपने खून के रिश्ते-नाते को भी किस तरह भूल जाते हैं इस ज्वलंत और यथार्थ सामाजिक समस्या का चित्रण इस कहानी में हुआ है ।

५ - अनाथ --

कुष्ठरोग की समस्या पर आधारित यह नई और अनोखी कहानी है । `ऐनी` की माँ, मौसी और नाना कुष्ठ रोग के शिकार है । उसके पिता `आइरिश` थे । समाजद्वारा ऐनी बिल्कुल बहिष्कृत थी । फिर भी एक बंगाली हिंदु युवक `बनर्जी` का उससे प्रेम हो जाता है । प्रेम का रुपान्तर विवाह में हो जाता है । बात बनर्जी के पिता तक जब पहुँच जाती है तो वे चील की भाँति झपटकर अपने बेटे को उठाकर बंगाल ले जाते है । ऐनी बिल्कुल अकेली रह जाती है । ऐसे में उसे बनर्जी से एक लडका होता है । ऐनी उस लडके को एक हिंदु अनाथालय भेजती है और समाज की अवकृपा टालने के लिए कुष्ठधाम चली जाती है । वह अपने लडके को अनाथ ही रखना चाहती है क्योंकि वह चाहती है कि उस लडके को इस बात का पता नहीं लगता चाहिए कि उसकी नानी कुष्ठरोगी थी । नहीं तो वह जीवन में दु:खी हो जाएगा ।

६ - भूल --

यह कहानी नायक प्रधान कहानी है ।दो जुडवा बहनों में से वह जिसे प्यार करता है वह होती है तृप्ति और उसके पहचानने में भूल होने से उसकी शादी तृप्ति की जुडवा बहन दीप्ति से हो जाती है ।

७ - सती --

शार्विलक नायिका ` मदालसा सिंगाडिया ` एक डकैत से कम खतरनाक नहीं है इसका अनुभव इस कहानी में मिलता है । प्रयाग स्टेशन पर गाडी खडी है । चार महिला यात्रियों से स्वयं लेखिका पहले उपस्थित है । बाकी तीन महिला यात्री भी आ जाती है । आखिर में जो महिला आती है अन्य तीन महिला यात्रियों से कहती है वह कल सती जाने वाली है । आज रात के अन्तिम भोजन में वे उसका साथ दें । तीनों महिला यात्री भोजन में सहभागी होती है और तुरन्त गहरी नींद में डूब जाती है । जब तीनों जाग जाती है तब तक मदालसा तीनों सहयात्रियों का द्रव्य और गहने लेकर फरार हो जाती है ।

८ - मौसी --

प्रेमविवाह तथा आंतर धर्मीय विवाह से संबंधित यह कहानी है । ज्यादातर प्रेमविवाह बाद में असफल हो जाते है । इस कहानी की नायिका ` तिला ` उर्फ मिसेज बेदी अपने ससुराल के तौर - तरीकों से बेहद तंग आ चुकी है । आधुनिकता ने उस घर को मर्यादाहीन बना दिया है । पति की उच्छृंखलता से उसे घृणा आ जाती है । तीसरी बार जब वह पेट से रहती है तो उसे अपना अन्त साफ दिखाई देता है । अत: विवाह के पश्चात् पहली बार मैके जाती है । घर से भाग कर उसने यह विवाह किया था । मैके में उसकी चचेरी बहन ` तारो ` भी आ जाती है । वह भी पेट से है । तारो के सभी बच्चे जन्म पाते ही मर जाते है । दोनों समय पर प्रसूत होती है । तिला अपनी बेटी तारो की बगल में लिटाकर उसकी बेटी को गोद में उठा लेती है । तीन दिन बाद तिला की उठाई गयी तारो की बेटी मर जाती है । तारो इस हेरा-फेरी से बेखबर है । तिला ससुराल लौटने लगती है वह तारो से कहती है -- तारो मैं नहीं आ सकी तो अपनी इस बिटीया से (जो ` तिला ` की है) कहना कि एक मौसी थी .... ।

९ - मसीहा --

यह एक नायक प्रधान कहानी हैं । सेवा ही सर्व श्रेष्ठ धर्म मानने वाला मनुष्य रूपी मसीहा ` वॉरेन्सी ` की यह कहानी हैं ।

१० - बन्द घडी --

पारिवारिक समस्या पर आधारित यह कहानी हैं । इस कहानी की नायिका ` माया ` हैं । उसका पति गिरीश शर्मा अपने विभाग का सबसे सम्मानित और ख्यातिप्राप्त इंजिनियर हैं । बडे-बडे पहाड डायनामाइट से उडाकर चौडी सुगम सडकें बनाने की प्रणाली वह अपने व्यक्तिगत जीवन में खींचकर लाना चाहता था । हमेशा झगडा सुखी परिवार के लिए हितकारी नहीं हो सकता हैं । इस तरह एक दिन इन झगडों से मुक्ति पाने के लिए और पति को सबक सीखाने के लिए आत्महत्या करने का निश्चय वह करती हैं । परंतु उसे इस जघन्य अपराध से ` बन्द घडी ` ही बचाती हैं । घडी बन्द थी इसलिए सही समय का पता माया को नहीं लग जाता । इतने में गिरीश अपने दो बच्चों के साथ हँसी मजाक करता हुआ, घर में प्रवेश करता हैं । उसे विश्वास होता हैं कि गिरीश उतना बुरा नहीं हैं और वह घडी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हैं ।

(४) कहानी संग्रह - किशनुली

कुल कहानियाँ - ६

१. दण्ड २. मन का प्रहरी ३.तीन कन्या ४.चन्नी

५. तोमार जे दोखिन मुख ६. दादी

इन में से ` दण्ड ` और ` मन का प्रहरी ` इन कहानियों का संक्षिप्त परिचय ` गैंडा ` इस कहानी संग्रह के अंतर्गत कराया गया हैं ।

३: तीन कन्या --

इस कहानी में कोई एक प्रधान नायिका है तो वह तीन कन्याओं की मिथ्या आडम्बरवादी और पुराणमतवादी माँ । लेखिका की सहेली की मामी । तीनों कन्याएँ देखने में साधारण हैं । उनमें सबसे छोटी कन्या `बेबी` की `प्रतुल` के साथ सगाई हुई है । पर पहली दो बेटियों का विवाह जब तक नहीं होता है तब तक बेबी का विवाह नहीं होनेवाला है । मामी पुराने और सामन्ती विचारों की हैं । वह प्रतुल और बेबी को एक क्षण भी एकान्त का सुअवसर नहीं देती । उसे अपने रायबहादुर बनर्जी परिवार के झूठी इज्जत का ही ख्याल अधिक रहता है । इससे तंग आकर प्रतुल सगाई तोड देता है । बेबी दु:खी हो जाती है । एक दिन जब प्रतुल अपनी नवविवाहिता के साथ नाव में सवार मामी और तीन लडकियों की नाव के नजदीक संयोगवश आ जाता है तब कह देता है -- `मेरी इस पत्नी को विवाह से पूर्व, मेरे साथ, रात आधी रात घूमने में कोई भी आपत्ति नहीं रही ... गुड बाय एण्ड गुड लक तीन कन्या ।` [१]

४: चन्नी --

एक असफल गृहस्थ नायिका किन्तु सफल प्रेमिका नायिका `चन्नी` की यह कहानी है । बिन माँ-बाप की यह लडकी अपने चाचा-चाची के दिए टुकडों पर पली, घर-भर की उतरने पहनकर भी कुन्द कली-सी वह चटकती रही । घर - भर की बासी जूठन उदरस्थ करने पर भी उसके स्वास्थ्य ने कभी हार नहीं मानी । चन्नी जब सोलह वर्ष की हो जाती है तो उसका रूप गाँव में तहलका मचा रखता है । उनके पडोस में ही मुसलमान परिवार रहता था । उस परिवार के `इरफान अहमद` के ढेर सारे प्रेम-पत्र उसे आने लगते हैं । आखिरकार उसकी शादी अलीगढ के `योगेन` से हो जाती है । परंतु तीन बच्चों की माँ बनने के बावजूद

---

१ शिवानी - तीन कन्या (किशनुली) - पृ.सं.६६ ।
सरस्वती विहार, दरियागंज, नई दिल्ली ।

भी वह अपनी गृहस्थी छोडकर अपने पुराने प्रेमी इरफान के साथ भाग जाती है । क्या जरूरत से ज्यादा योगेन द्वारा उस पर डाले गए बन्धनों का ही यह परिणाम था ? अथवा चन्नी ने अपने प्रेम के खातिर पारिवारिक सुख को भी न्यौछावर कर दिया ? (पारिवारिक सुख के नाम पर हमेशा उसे योगेन की डाँट खानी पडती थी और तीन ऐसी बदशकल लडकियों से उसका पाला पडा था जो असुन्दर तो थीं ही कुरूप भी थी ।) लेखिका के ही शब्दों में इस कहानी का परिचय यहीं समाप्त कर देते हैं --` मैं तो स्तब्ध थी । मन ही मन मैं जानती थी कि चन्नी कभी भाग नहीं सकती । भागने की भी तो आखिर एक उम्र होती है । चौंतीस वर्ष की पढी-लिखी तीन बच्चियों की माँ चन्नी भला किसके साथ भाग सकती थी ।`[१]

५ : तोमार जे दोक्खिन मुख --

वैसे तो यह कहानी नायक प्रधान ही है । ` राघवन ` लेखिका का पुराना सहाध्यायी । देखने में अत्यंत कुरूप । कॉलेज के दिनों में लेखिका को छेडने की वजह से लेखिका का भाई उसका एक दाँत तोडता है । आज कई वर्षों बाद तमिलनाडु एक्सप्रेस में उससे मुलाकात होती है । अपनी सुन्दर परन्तु अभिनयकुशल पत्नी` विशालाक्षी ` और अपना प्रबंधक मित्र` अखिलन ` इनकी हत्या के जुर्म में – उसे फाँसी की सजा फर्मायी जाती है । अपनी व्यथा वह लेखिका को जब बताता है कि ऐसी मृत्यु पाने वाले की आत्मा को शांति कभी नहीं मिलती । तब लेखिका तमसोमा ज्योतिर्गमय ... प्रार्थना की उसे याद दिलाती है और उसी नाम का स्मरण करो -` तोमार जो दोक्खिन मुख ` कहती है । मद्रास पहुँचने के बाद लेखिका को पता चलता है कि राघवन की मृत्यु तो पन्द्रह वर्ष पूर्व हुई थी ।

६ दादी --

एक व्यवहारकुशल और अनुभवसंपन्न स्त्री की यह कहानी है । अपनी

---

१ शिवानी - चन्नी (किशनुली) - पृ.सं.१६ - सरस्वती विहार, दरियागंज, नई दिल्ली ।

छोटी बहू के यहाँ दादी रहने के लिए आ जाती हैं । बहू आधुनिक विचारों की हैं । क्लब जाती हैं । खाना खुद नहीं पकाती । बहू एक नया नौकर रखती हैं बिना उसकी पूछताछ करके । दादी बार बार उस नए नौकर की पूछताछ करती हैं । बहू को यह अच्छा नहीं लगता । परंतु अन्त में बहू को अपनी गलती का एहसास होता हैं, क्योंकि अपने आप को कान्यकुब्ज ब्राह्मण कहलाने वाला वह शख्स पाकिस्तानी जासूस निकलता हैं । आसपडोस के लोग उस पाकिस्तानी जासूस की हत्या करने पर उतारू हो जाते हैं पर वज्रादपि कठोर ऐसी दादी अब कुसुम से भी कोमल बन जाती हैं और वह भीड को उसकी हत्या करने नहीं देती । इस तरह दादी के स्वभाव के कई पहलू इस कहानी में स्पष्ट हुए हैं । पापभीरू ,धर्मपरायणा दादी अपने पोतों के लिए जी जान से प्रिय हैं । वे उससे लिपटकर अभयदान की याचना करते हैं --` प्रॉमिस दादी, तुम इस बार भागोगी नहीं ? ` [१]

(५) कहानी संग्रह - कृष्णवेणी --

कुल कहानियाँ - ६

१. प्रतीक्षा, २.लाटी ३. पिटी हुई गोट

४. दो स्मृतिचिह्न ५. विप्रलब्धा ६.शायद ।

१:: प्रतीक्षा --

इस कहानी की नायिका ` माधवी ` पागलपन के दौरे की बीमारी से ग्रस्त हैं । परंतु वह हैं तो सुन्दरता की मूर्ति । इस कहानी का नायक ` विमल जोशी ` उसकी सुन्दरता पर रीझकर उसी से शादी करना चाहता हैं । शादी के बाद कुछ दिन बहुत अच्छे बीत जाते हैं । विमल की बदली ` बरेली ` हो जाती हैं । ` बरेली ` का नाम सुनते ही उसपर पागलपन का दौरा आ पडता हैं । विमल को इस सच्चाई का सामना करना मुश्किल हो जाता हैं । ` बरेली ` में एक

---

१ शिवानी - दादी (किशनुली) - पृ.सं.११३,
सरस्वती विहार - २१, दयानंद मार्ग,
दरियागंज नई दिल्ली ।

पागलखाने में माधवी को रखना विमल के लिए जरूरी बन जाता है। बडी कठिनाई से नैनीताल के जाने के बहाने उसे बरेली के जाने का प्रबन्ध किया जाता है। एक प्रतीक्षालय में माधवी को छोडकर विमल जोशी लौट जाता है। स्वार्थ भरा प्रेम, सुंदर शरीर पर किया गया वासनात्मक प्रेम अपनी जिम्मेदारी किस तरह टालता है इसका यह एक ज्वलन्त उदाहरण है।

२:: लाटी --

टी.बी.पेशंट `बानो` का पारिवारिक जीवन किस तरह ध्वस्त होता है यह इसमें दर्शाया गया है। बानो की शादी के तीन दिन बाद उसका पति `कप्तान जोशी` लडाई पर जाता है। ससुरालवाले बानो के साथ कभी अच्छा व्यवहार नहीं करते। उसे हमेशा जली-कटी सुनवाते हैं और घर काम में उसे गाड देते हैं। लडाई से जब कप्तान जोशी लौट आता है तो जो बानो उसे प्राणों से प्रिय थी उसी के प्राण उसे संकट में नजर आते हैं। सैनेटोरिया में बानो को रखा जाता है। अंतिम क्षण निकट आते देखकर वह वहाँ से आत्महत्या करने निकलती है। पूल पर से नदी में कूद पडती है। तिब्बटी साधु द्वारा उसे बचाया जाता है। पूल पर से गिरने के कारण उसकी जीभ कट जाती है। गूंगी हो जाती है। तिब्बटी भिक्षुणियों में उसे शामिल किया जाता है। वे उसे `लाटी` नाम से पुकारती है। उधर कप्तान जोशी कर्नल जोशी बनते हैं दूसरी शादी करते हैं। तीन बच्चों के बाप बनते हैं। एक दिन अपनी दूसरी पत्नी के साथ एक होटल में ठतरते हैं तो `लाटी` के रूप में अपनी परम प्रिय प्रथम पत्नी बानो के पुन:दर्शन से आश्चर्यचकित हो जाते हैं।

३:: पिटी हुई गोट --

अनमेल विवाह, पुनर्विवाह की समस्या तो है ही इस कहानी में, अपितु एक जुआरी पति गुरनदास जिसकी उम्र ६३ वर्ष की है जुए में हार जाने के कारण अपनी १८ वर्षीय पत्नी चंदा को जुआरी महिम भट्ट के हवाले जब कर देता है

तब वह अपनी आँखों के सामने उस लम्पट पुरुष के द्वारा अपनी पत्नी के साथ काममूलक सम्बन्ध अनुभव करता है तो उसे जो हताशा हो जाती है वही हताशा उसे गहरे पानी में कूदकर आत्महत्या करने को किस तरह प्रेरित करती है यह भी दर्शाया गया है । पहाडी प्रदेश की निर्धनता की समस्या भी इसमें चित्रित हुई है ।

४:: दो स्मृतिचिह्न :--

अन्तर्जातीय प्रेम-विवाह तथा सन्तान हीनता की समस्या का मुकाबला करनेवाली नायिका ` बिन्दु ` की यह कहानी है । अपने इस विवाह के कारण उसका पितृ-गृह से रिश्ता ही खत्म हो जाता है । उसकी बहन इन्दु के विवाह में उसे बुलाना था । पर उसके पिताजी ने कहा था --` खबरदार जो उस कुलबोरनी को बुलाया । हमारे लिए तो वह मर खप गई । ब्राह्मण की बेटी बनिए की बहू बनने गई तो कहो, वही बने रहे ।` अपने मैकेवालों के ऐसे कितने ही वार उसने सह लिए हैं । वह अपनी ससुराल में सब प्रकार के सुख पा रही है । फिर भी सन्तान की कमी उसे हमेशा महसूस होती है । इसीलिए जब एक बार उसके पति के कोट पर इन्दु के नन्हे बेटे सुरेश के दो नन्ही हथेलियों का चॉकलेट का ठप्पा लगता तब और जब दूसरी बार एक पडोसी के थोडी देर के लिए उसके घर आया हुआ नन्हा पाहुना उसका कीमती विदेशी रग गिला कर देता है तब उसके तो जी में आ जाता है कि उन दोनों स्मृतिचिह्नों को सुनहरे चौखट में मढ अपने जीवन के रिक्त कक्ष में टांग दे और दिन-रात निहारती रहे ।

५:: विप्रलब्धा --

कहानी का शीर्षक काव्यशास्त्रीय नायिका भेद से संबंधित है ।

काव्यशास्त्र में - जिस नायिका के प्रेमी / पति ने आने का तो वादा किया है पर वह नहीं आ पाता ऐसी विरहपीडित नायिका को ` विप्रलब्धा ` कहते हैं । इस कहानी में निम्मी उर्फ निर्मला की सगाई सुरेश से होती है । सुरेश की अभी पढाई बाकी है । उसमें एक वर्ष टल जाता है । परन्तु उसके बाद एकेक वर्ष

सुरेश के घर कुछ ऐसी विपत्तियाँ आ जाती हैं जिससे उनका विवाह लगातार तीन वर्षों रुक जाता हैं । और जब विवाह की तिथि निश्चित कराने के लिए उसका पत्र आ जाता हैं तब निर्मला की मूर्खता के कारण यह सगाई टूट जाती हैं । वह उसे पत्र लिखती हैं --` अब के अपने घर-भर के बड़े-बूढ़ों की डाक्टरी जाँच करा लेना, तब तिथि निश्चित करना । कहीं ऐसा न हो कि फिर मुहूर्त टल जाए ।` पत्र पाते ही सुरेश अपने चाचा से कह देता हैं कि वह गाँव की अनपढ कन्या भले ही ले आए, पर अब उस घमण्डी लड़की से रिश्ता नहीं करेगा जिसने उसके मृत-गुरुजनों का अपमान किया हैं । इस घटना को चौबीस वर्ष हो जाते हैं । निम्मी के पास आज भी सुरेश की अंगूठी हैं । परंतु जब उसे पता चलता हैं कि जिस विवाह में वह जा रही हैं वह स्वयं सुरेश से बेटे का विवाह हैं तो वह अपनी सहेली से अंगूठी सुरेश को देने के लिए यह कहकर देती हैं --` आज तक जिसके लिए मूर्खतावश इसे पहनती रही वह मेरे अज्ञान से अन्धी कल्पना दृष्टि में अभी भी मेरे लिए कुंआरा बैठा था । आज अचानक वही अपने बेटे की बारात सजाकर चल दिया तो अब किसके लिए पहनू ?`

६:: शायद --

नारी के सम्पूर्ण समर्पण की तुलना में पुरुष` शायद ` ही तौला जा सकता हैं ।` कुसुम ` की मौसी का देवर` तारी ` कुसुम से ही शादी करना चाहता हैं वरना कुँआरा रहना पसंद करता हैं । कुसुम के पिता इस विवाह के विरुध्द हैं । कुसुम को तारीसे मिलने नहीं दिया जाता हैं । दरम्यान तारी को टी.बी.हो जाता हैं । उसे अल्मोडा के सैनेटोरियम में रखा जाता हैं । सैनेटोरियम में मौत का ग्रास बन रहे तारी के हवाले कुसुम अपना सर्वस्व समर्पित करती हैं । कुसुम के पिता कुसुम की शादी एक दूसरे युवक से कर देते हैं । परन्तु उसकी असमय ही मृत्यु हो जाती हैं । विधवा कुसुम अपना एकाकी जीवन संन्यस्तवृत्ती से संयम से गुजारने लगती हैं । इधर तारी इस दुनिया में नहीं हैं ऐसा सब लोग समझाने लगते हैं परंतु तारी भयंकर बीमारी से बच जाता हैं विवाह करके सुखी बन जाता हैं परंतु जब कुसुम के दुबारा दर्शन होते हैं तो वह फिर बेचैन हो जाता हैं लेखिका से वह उसके

बारे में पूछताछ करने लगता है परंतु उसकी पत्नी जब उसे बीच में ही टोकती है तब वह उसे कहता है -- ' विक्यिन, मैं इनसे अपने एक बहुत पुराने खोए मित्र के बारे में पूछताछ कर रहा था । शायद उसका कुछ अतापता बता सके ।'

(६) कहानी संग्रह - माणिक

कुल कहानिया -

१. तर्पण २. नोकर ३. स्वप्न और सत्य

४. चार दिन की ५. कालू ६. आमि जे बनलता

७. दाना मियाँ ।

(१) तर्पण --

एक बलात्कारिता के प्रतिशोध की यह कहानी है । बीस साल पहले भोलादत्त तेरह वर्ष की पुष्पा पन्त पर बलात्कार करता है । इस हादसे को बरदाश्त न कर सकने के कारण उसकी माँ मर जाती है । पिता भी आत्महत्या कर लेता है । वह अनाथ हो जाती है । इस भयावह काण्ड को वह कभी नहीं भूलती । अविवाहित रहकर वह एकहाईस्कूल में हेडमास्टरी करने लगती है । आगे चलकर यही भोलानाथ मंत्री बन जाता है । उसके स्वागत के लिए पुष्पा पन्त को अपने हाईस्कूल की छात्राओं को जिलाधीश के आग्रह पर तैयार करना पडता है । परन्तु जैसे ही भोलानाथ सामने दिखाई देता है और जब वह उसके साथ बोलने की कोशिश करने लगता है पुष्पा पन्त पुरानी बातों को याद करके थरथर काँपने लगती है और ' कुछ ही घंटों पूर्व तम्बू गाडने लाया गया बडा-सा घन जो वहीं पडा था लपककर वह उसे उठा लेती है और दोनों हाथों से पकडकर दन्न से भोलादत्त के सिर पर दे मारती है ठीक जैसे चितई मन्दिर के पथरीले प्रांगण में जटाधारी नारियल फट से फूटता है ऐसे ही भोलादत्त का सिर फट से दो समान फांकों में फटकर रह जाता है ।'[१]

---

१ शिवानी - तर्पण - (माणिक) - पृ.सं.८१ -

पुलिस उसे ले जाने लगती है । वह एक जगह रुककर, कुछ ही दिन पहले जिससे उसका परिचय हुआ था और परिचय का रूपांतर प्रेम में हो रहा था, उस पीताम्बर पांडे से एक बार मिल लेती है । वह कहती है -- ' जानते हो मैंने हत्या क्यों की ? आज से वर्षों पूर्व इस दानव ने मेरा सर्वस्व हरण किया था । उसी लज्जा ने मेरे पिता के प्राण लिए, माँ को दिल का दौरा पडा और वह भी चली गई । आज इतने वर्षों में मैंने पुत्री होकर भी माता-पिता का तर्पण किया पीताम्बर । ' [१]

(२) जोकर --

एक माता अपने पुत्र के विरह से कितनी व्याकुल होती है चाहे वह पुत्र एक अत्यंत बौना और कुरूप व्यक्तित्व का क्यों न हो । श्रीमती तिलोत्तमादेवी आकाशवाणी कलकत्ता की बहुचर्चित गायिका कलाकार अपने जीवन के एक अभिन्न अंश को ढूँढने शहर दर शहर भटकती है । जहाँ कहीं सर्कस लग जाती है वहाँ जोकरों में अपने बेटे को ढूँढती है क्योंकि बेटे की कुरूपता और बौनेपन के कारण तिलोत्तमा के पति ने उसे किसी सर्कस कम्पनी को दे दिया था । आज वह फिर एक सर्कस कम्पनी में एक जोकर को देखती है तो उसे लगता है वही उसका खोया हुआ बेटा है परंतु सर्कस मैनेजर कहता है यह इसी कम्पनी के कलाकारों का बेटा है और जन्म से यही है । तिलोत्तमा का इस बात पर विश्वास नहीं होता । वह नहीं कहकर हिस्टीरीकल होने लगती है ।

(३) स्वप्न और सत्य --

इस कहानी में लेखिका अपने एक भयावह स्वप्न का जिक्र करती है जिसे वह कुछ दिनों बाद वास्तव में घटित हुआ देखती है । निर्जन जंगल के रास्ते से जाते समय उसे एक म्लानमुखी युवती अपने नवजात अर्भक को रखकर बली जाती है । रात का समय और बारिश में लेखिका उस बच्चे को उठाकर घर ले जाने का साहस

---

१ शिवानी - तर्पण (माणिक) - पृ.सं. ८३ ।

नहीं करती । घरवाले इसे स्वीकार नहीं कर सकेंगे इस डर से । फिर भी लौट आने के बाद उसे उस बच्चे की चिंता सताने लगती हैं । संवेदनशील नारी हृदय में उत्पन्न भावनाओं का यह एक सजीव चित्र हैं ।

(४) चार दिन की --

यह नायक प्रधान रचना हैं । इस रचना के नायक हैं -- साहबजादे अब्दुल वाहिद खान । लेखिका के पिताजी के मित्र । उनके द्वारा कथित पुराने जमाने की वैभवशाली स्मृतियाँ इस में चित्रित हैं ।

(५) कालू --

यह एक नायक - प्रधान कहानी हैं । शांतिनिकेतन में लेखिका नौ वर्षों तक आश्रमकालीन शिक्षा लेती रही तब शांतिनिकेतन में `कालू` से उसका परिचय होता हैं । रंग से काला और आँखों से अन्धा साथ ही साथ अनाथ `कालू` आश्रम का आकर्षण केन्द्र बना था, क्योंकि वह भजन-कीर्तन अच्छा गाता था । दृष्टीहीन होते हुए भी पदचाप से वह लेखिका को पहचानता था । हमेशा गौरा दी गौरा दी करके उसने लेखिका के मन में अपने लिए एक छोटे भाई का स्थान बनाया था । अब लेखिका को एक बात का पछतावा होता हैं कि शांतिनिकेतन से विदा लेते समय उसने कालू से क्यों कहा था कि ईश्वर ने चाहा तो पौषोत्सव में फिर मिलेंगे ? क्योंकि कालू ने तब कहा था -- `अब इतनी दूर से तुम आ पाओगी ? कोई बात नहीं, पौषा के मेले में न सही, परलोक के मेले में तो मिलना होगा ही गौरा दी ।`[1] और सचमुच लेखिका का आश्वासन व्यर्थ सिद्ध होता हैं क्योंकि कालू की मृत्यु का समाचार उसे कुछ वर्षों बाद मिलता हैं ।

---

१ शिवानी - कालू (माणिक) पृ.सं.१२८ ।

(६) आमि जे बनलता --

एक असफल प्रेमिका की यह कहानी है । शिवानी को ज्यादातर कहानी नायिकाएँ रेल-यात्रा में ही प्राप्त हुई हैं । उनमें से एक `बनलता` । अत्यंत सुन्दर परंतु एक हादसे के कारण पूरी पागल । एक पैर लकडी का । सब यात्रियों को वह अपने लकडी के पैर का प्रसाद देती है । वह अपनी युवावस्था में एक फिरंगी साहब से धोका खा चुकी है । वह उसे अपने साथ शिकार खेलने ले जाता है और वहीं पर मचान टूटने के कारण जो दुर्घटना होती है उसमें बनलता की टाँग टूटती है । `होश में आई तो देखा टाँग ही नहीं, फिरंगी प्रेमी भी चला गया है - मरा ।`[१] तब से वह सिर्फ गाती फिरती है । वह कहती है अब तो सिर्फ गाना ही उसके नसीब में बचा है ।

(७) दाना मिया --

`दाना मिया` नाम के एक पठाण का यह रेखाचित्र है । पुरानी पुस्तकें खास करके अंग्रेजी पुस्तके बेचने और खरीदनेवाला दाना मियां तल्लीताल के निवासियों के लिए अपनी मीठी यादें छोडकर चला जाता है ।

(७) कहानी संग्रह -- मेरी प्रिय कहानियाँ
कुल कहानियाँ - १०
१.करिए छिमा २.पुष्पहार ३.के ४.चौलगाडी
५. सती ६. ज्येष्ठा ७. शपथ ८. अपराधी कौन
९. तोप १०. मधुयामिनी ।

---

१ शिवानी - आमि जे बनलता (माणिक) पृ.सं.१३६ ।

१) करिए छिमा --

स्वयं लेखिका की दृष्टि से यह उनकी सबसे प्रिय कहानी है । ` मेरी आज तक प्रकाशित कहानियों में ` करिए छिमा ` मेरी सबसे प्रिय कहानी है ।[१] ` इस कहानी की नायिका ` हीरावती ` का इसके पूर्व लिखी गई ` अपराधिनी ` संग्रह की कहानी ` अतल माई ` में ` रजुला ` के रूप में चित्रण किया गया है । सच्चा प्रेम त्याग पर आधारित होता है । हीरावती को श्रीधर द्वारा अवैध मातृत्व प्राप्त होता है । परंतु श्रीधर की प्रतिष्ठा पर वह आँच नहीं आने देती । नवजात शिशु को वह अलकनंदा नदी में डूबो देती है । बरसों बाद वह श्रीधर से मिलने जाती है । सिर्फ दर्शन लेकर वह लौट जाती है । न एक शब्द उपालम्भ का, न लांछन का, न याचना का न अधिकार का । सिर्फ ` उसने ऐसा क्यों किया ? ` का उत्तर देकर वह चली जाती है ?

२) पुष्पहार --

` करिए छिमा ` की त्याग की मूर्ति हीरावती पतिता होकर भी सती के पद पर पहुँच गयी है । परंतु ` पुष्पहार ` की नायिका ` दुर्गी ` विवाहिता होकर भी पति की तथा साथ ही साथ पूर्वाश्रमी के अपने प्रेमी की घोर प्रवंचना करती हुई दिखाई देती है । ` दुर्गी ` के प्रेम के खातिर उसका प्रेमी अपना मंत्रीपद तक खो बैठता है । जो गाँववाले उसे पुष्पहार पहनाकर उसे सम्मानित किया करते थे वे ही उसकी भर्त्सना करने लगते है । अत्यन्त विपन्न और विकलांग अवस्था में उसका अन्त होता है परंतु अंतिम क्षणों तक दुर्गी के हाथों का पुष्पहार पहनने की उसकी इच्छा अधूरी ही रह जाती है । वह तो अपने पति को छोडकर किसी और एक फौजी के साथ नाता जोड बैठती है ।

---

१ शिवानी - भूमिका (मेरी प्रिय कहानियाँ) - पृ.सं.१ ।

३) के --

प्रौढा नायिका ` के ` उर्फ डॉक्टर ` कमला ` के साथ उसके आधी उम्र के नौजवान ` किशोर ` को घूमते देख लोग कहने लगे - ` डॉक्टरनी ने एक बडे ही सजीले नौजवान को गोद लिया है अब अपनी सम्पत्ति भी उसके नाम लिख रही है । ` [१] पर उस एम.एस.सी. फाइनल के छात्र ` शेखर ` से जब वह विवाह कर लेती है, तो लोग कहने लगते है - ` अधेड डॉक्टरनी की मति मारी गई है । पढाई के लिए डॉक्टरनी के आश्रय में रह रहा शेखर उसके एहसानों मे दबा अपनी गृहस्थी में पति के स्थान पर सेवक बन जाता है । ऐसे में डॉक्टर ` के ` के बंगले में प्रतिवेशिनी - संतनियों की मंडली में से सुंदरी ` किशोरी ` का प्रवेश हो जाता है । स्वयंदूती किशोरी के आकर्षण में शेखर बँध जाता है । यह बात ` के ` से छिपी नहीं रहती । ` कुल्फी ` में जहर मिलाकर ` के ` किशोरी को कुल्फी देती है और अपने मार्ग को निष्कंटक बना देती है ।

४) चीलगाडी --

अनमेल विवाह तथा विधवा के जीवन कीसमस्या पर आधारित यह कहानी है । आत्मकथनात्मक शैली में लिखी गई इस कहानी की नायिका का विवाह एक ऐसे व्यक्ति से हो जाता है विवाह के बाद सात-आठ महीनों में ही चल बसता है । पति के घर की समृध्दता पति के बिना व्यर्थ ही सिद्ध होती है । नायिका रूपवती एवं सुसंस्कार से युक्त होने के कारण पुरुषों की बुरी नजर से बचना उसके लिए कठीन हो जाता है । अत: वह अपने श्वसुर-गृह को त्याग कर विमान की परिचारिका बन जाती है । उसे अब बस एक ही चिन्ता रह जाती है अपने छोटे भाई की जो विमान को देखकर ` चीलगाडी , चिलगाडी ` कहकर अपने समवयस्कों में रमता है ।

---

१ शिवानी - के (मेरी प्रिय कहानियाँ) - पृ.सं.५० ।

५) सती --

(इस कहानी का परिचय ` कैबा ` इस संग्रह के अंतर्गत कराया गया है ।)

६) ज्येष्ठा --

` पिरी ` उर्फ ` हरिप्रिया ` के वैवाहिक जीवन की समस्या इस कहानी में चित्रित है । कूर्मांचल के कर्मकांडी परिवारों में कुंडली देखकर ही विवाह निश्चित करते हैं । पिरी की कुंडली पहली बार ही जब खोटे सिक्के-सी लौट आती है तो आल्मोडा - भर की कुंडलियों की रेखाओं का लेखा-जोखा रखने वाले भट्टजी कुंडली का भेद खोल देते हैं --` जहाँ जहाँ पात्र से बडा भाई होगा वहाँ-वहाँ से कुंडली ऐसे ही लौट आएगी पंतजी , कन्या का जेष्ठा नक्षत्र है । ` । सौभाग्य से पडोसी पांडे परिवार के ज्येष्ठ पुत्र ` राजेश ` की मृत्यु का समाचार पाते ही पिरी के पिता पंतजी पांडेजी के दूसरे पुत्र ` देवेश ` से उसकी मंगनी तय करते हैं । परंतु विवाह के ऐन मौके पर पंद्रह वर्ष लापता रहा राजेश आ टपकता है । पिरी की सगाई टूट जाती है । वह ऐसे जेठ की मृत्युकामना के लिए जाखनदेवी को घृतदीप जलाती है । बीस वर्षों पिरी अविवाहित रहती है उसके लिए देवेश भी अविवाहित रहता है । पिरी डॉक्टर बन जाती है । उसका जहाँ जहाँ तबादला होता है वहाँ देवेश जाता है । परंतु पिरी के भाग्य का ज्येष्ठा नक्षत्र अपनी करामत दिखाता ही है । देवेश की मृत्यु हो जाती है । बीस वर्ष का अवधि बीत जाता है तब लेखिका पिरी को एक पार्क में राजेश के साथ देखती है तो अवाक् हो जाती है । पिरी के गले में मंगलसूत्र देखकर लेखिका को नारी के इस छलनामयी रूप का आकलन नहीं हो पाता है ।

७) शपथ --

` अप्रेल - फूल ` का मजाक कितना भयावह रूप धारण कर सकता है इसकी जीती-जागती कहानी है ` शपथ ` । कहानी की नायिका ` शुभ्रा `

अपनी जेठानी ` कालिन्दी ` से ऐसा जहरीला मजाक कर बैठती है कि कालिन्दी के दिमाग की नली फट जाती है और उसकी मृत्यु हो जाती है । झूठी कसम खाकर अपनी जेठानी की मृत्यु का कारण बननेवाली शुभ्रा इस घटना से इतनी भयभीत हो जाती है कि वह स्वयं अपने शेष पारिवारिक जीवन में नितांत दु:खी हो जाती है ।

८) अपराधी कौन --

चोरी करने की प्रवृत्ति गरीबों में ही होती है ऐसा नहीं । सोने-चाँदी के आभूषण कुछ स्त्रियों की कमजोरी बन जाते है । इसके लिए चोरी करने का मोह भी वे नहीं टाल सकतीं । सोने की करधनी के लिए ` अम्मा ` और ` मीना ` अपनी मामी-ननद का रिश्ता भूलकर अपने ही घर में चोरी करने के लिए प्रवृत्त होती है तो अनायास ही प्रश्न निर्माण होता है-- ` अपराधी कौन ` ?

९) तोप --

उसका वास्तविक नाम ` क्रिश्चियाना वेरानिका टॉमस ` था । उसके छ: फुटे मर्दाने शरीर और कण्ठ के पुरुषी स्वर के कारण किसीने उसका ` तोप ` नाम रखा था । शरीर की भूख मिटाने के लिए पचास साल की उम्र में भी वह अपने सैनोटोरियम में रखे गए बीस-बाईस वर्षों के रत्नों से विवाह रचाती है । उसकी यह भूख शायद उसकी मृत्यु के साथ खत्म होनेवाली है ।

१०) मध्यामिनी --

यह कहानी नायक अथवा नायिका प्रधान न होकर समस्या प्रधान है ।

वधू जन्म से बहरी और गूंगी है तथा वर की एक आँख काँच की है, पर दोनों को इस बात का पता नहीं है । विवाह के बाजार में लोग अपना व्यंग किस तरह छिपाकर रखते है इसका यह एक मनोरंजक उदाहरण है ।

(८) कहानी संग्रह - पूतोंवाली

कुल कहानियाँ - ३

१.श्राप २. लिखूं ३.मेरा भाई ।

१: श्राप --

एक असहाय माँ के संतप्त हृदय से निकला हुआ यह श्राप हैं - " जैसे उस कसाई ने मेरी बेटी को जलाया हैं वैसे ही वह भी तिलमिलाकर जले ।" [१] यह श्राप दहेज के लालची ससुरालवाले, जिन्होंने इस माँ की फूल जैसी बेटी दिव्या को जिन्दा जलाया था उनको दिव्या की माँ ने दिया हैं । स्पष्ट हैं कि दहेज की समस्या पर आधारित यह कहानी हैं ।

२: लिखूं -- ?

शायद लिखूं या न लिखूं के अन्तर्द्वंद्व में यह कहानी लिखी गयी हैं ।

लेखिका की शांतिनिकेतन की सहेली प्रिया दामले जो अब प्रिया पटवर्धन हैं उसका वैवाहिक जीवन उसमें हो गए लिंग-परिवर्तन के कारण खतरे में आ जाता हैं । उसका स्त्री से पुरुष में रूपान्तरित होना उसके लिए पारिवारिक चिन्ता का कारण बन जाता हैं - " डॉक्टर ने मेरे सन्देह की पुष्टि की, मैं धीरे-धीरे नारी का चोला छोड रही थी, एक सामान्य-सा आपरेशन ही मुझे पुरुष बना देगा, किन्तु मेरा पौरुष क्या मेरा ही सर्वनाश नहीं कर देगा, मेरी निर्दोष बच्ची, मेरा देवतुल्य पति ? वे क्या मेरे पौरुष को स्वीकार कर पाएँगे । क्या स्वयं मेरी लज्जा उनकी भी लज्जा नहीं बन जाएगी ? " [२] ऐसा सोचकर अपने पति और बच्ची को विदेश ही में छोडकर वह भारत लौटती हैं । यहाँ वह उसके परिवर्तित

---

१ शिवानी - श्राप (पूतोंवाली) - पृ.सं.१८ ।

२ शिवानी - लिखूं (पूतोंवाली) - पृ.सं.११३ ।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

पुरुष रूप में मिस्टर ` प्रिय दामले ` बन जाती हैं और एक क्रिश्चन स्त्री से विवाह करती हैं । वहीं बात अखबार की मृत्यु सूचना से लेखिका को इस बात का भी पता चलता हैं कि स्वर्गवासी मिस्टर प्रिय दामले के पीछे उनकी पत्नी और दो बच्चे भी हैं ।

३: मेरा भाई --

इस नायक प्रधान कहानी में बहिरंग से काला और कुरूप ` सुब्बय्या ` अपने हाथों में राखी बांधनेवाली लेखिका का राखीबन्द भाई आगे चलकर एक कुख्यात डकैत बन जाता हैं । एक बार ट्रेन में उसकी इस बहन से भेंट हो जाती हैं । वह अपने पुराने रिश्ते को याद करके उसका सूटकेस रुपयों सहित वापिस कर देता हैं और अपनी बहन के लिए सौ सौ पौंडों की गड्डी, डालर, दीनार और फ्रैंक से भरा बटुआ उसके सूटकेस में छोड देता हैं । लेखिका इस धन को तिरुपति के दान-पात्र में डाल देने की और उसके लिए तिरुपति से प्रार्थना करने की सोचती हैं ।

(९) कहानी संग्रह -- पुष्पहार

कुल कहानियाँ - ११

१. पुष्पहार २. मधुयामिनी ३. तोप ४. दो स्मृतिचिह्न
५. शर्त ६. भूल ७. चोलगाडी ८. सती ९. विप्रलब्धा
१०. मौसी ११. शायद ।

उपर्युक्त कहानियों में से पुष्पहार, मधुयामिनी, तोप और चोलगाडी इन कहानियों का ` मेरी प्रिय कहानियाँ ` इस संग्रह के अंतर्गत, भूल, सती और मौसी इन कहानियों का ` कैना ` में और दो स्मृतिचिह्न , विप्रलब्धा और शायद इन कहानियों का ` कृष्णवेणी ` में परिचय कराया गया हैं । इस कहानी - संग्रह की ` शर्त ` कहानी का परिचय अब हम प्राप्त करेंगे ।

शर्त --

नारी की महत्वाकांक्षा नारी की समस्या किस तरह बन जाती है, इसका उदाहरण है शर्त कहानी। रमा और लीला में आनंद पांडे आई.सी.एस. के लिए शर्त लग जाती है। लीला रमा से कहती है --` तेरे इन्हीं मनमोहन से मेरे रिश्ते की बात चल रही है पगली। .... बेकार में स्वेटर मत बुनना...।` रमा कहती है ` बात चलने में और रिश्ता पक्का होने में बडा अन्तर है लीला। मैं शर्त रख सकती हूँ कि चाची तेरा रिश्ता कभी नहीं लेंगी।` लीला कहती है --` तू शर्त जीत गयी लाडो, तो मैं तेरी बाँदी, नहीं तो यह तेरा इनाम।` कहकर उसने मोटा काला अंगूठा फिर नचा दिया।`[1]

जीत डिप्टी मिनिस्टर भोलेश्वर जोशी की बेटी लीला की होती है। आज बरसों बाद स्कूली मास्टर रामदत्त पंत की बेटी और दो राजसी पुत्रों की माँ, अपने आई.सी.एस.पति गिरीन्द्र जोशी की समृध्द गृहस्थी का प्रदर्शन करके नि:संतान लीला आनन्द पाण्डे को नीचा दिखाने का प्रयास रमा करना चाहती है पर इस बार भी लीला ही बाजी मार लेती है। इस कहानी में महत्वाकांक्षिणी नारियों के ईर्ष्यालु स्वभाव के दर्शन होते है।

(१०) कहानी संग्रह - रथ्या

कुल कहानियाँ - ५

१.अपराधी कौन २.तोप ३.मृत्याग्नि

४. मरण सागर पारे।

---

१ शिवानी - शर्त (पुष्पहार) - पृ.सं.७५।

इनमें से अपराधी कौन, तोप, मृगयामिनी (मेरी प्रिय कहानियाँ इस संग्रह में) इन कहानियों का परिचय कराया गया हैं । अब प्रतिशोध और मरण सागर पारे इन कहानियों का परिचय हम प्राप्त करेंगे ।

प्रतिशोध --

महत्वाकांक्षिणी नारी की समस्या पर आधारित यह और एक कहानी हैं । सौदामिनी आई.सी.एस.अफसर शंकर की पत्नी हैं । वह उन लापरवाह गृहिणियों में से नहीं थी, जिन्हें पति के ऊँचे आहदें की समृध्दि गृहस्थी के प्रति उदासीन बना देती हैं । धोबी उसका एक रुमाल भी खो देता तो वह पैसे काट लेती । ... नौकरों को ही नहीं पति के अधीनस्थ अफसरों को भी वह तर्जनी पर नचाती रहती ।'[१]

वह अपनी लडकी का प्रेम-विवाह कराने के पक्ष में हैं । इससे दहेज जुटाने की आवश्यकताही नहीं रहेगी । वह कहती हैं --' इस युग के प्रत्येक बुध्दिमान माता-पिता का कर्तव्य हैं कि वे अपनी सन्तान को ऐसे प्रेम-विवाह के लिए उत्साहित करें ।'[२]

विवाह के उपरान्त कुछ दिनों में वह अपने पति को सास-ससुर से अलग करती हैं । अपनी इस महत्वाकांक्षा का फल भी उसे मिलता हैं । उसकी लडकी एक मुसलमान लडके के साथ भाग जाती हैं । सौदामिनी का पति शंकर अब उससे और नाराज हो जाता हैं । वह इस बात के लिए सौदामिनी को ही दोषी ठहराता हैं । कुंठित पति इन बातों से शांति पाने के लिए ' कॉल गर्ल ' की पनाह लेता हैं । दुर्भाग्यवश वह कॉल गर्ल एक बडे अफसर की बेटी होती हैं जो शंकर से सच्चा प्यार कर बैठती हैं और अवैध मातृत्व से बचने के लिए वह आत्महत्या कर लेती हैं ।

---

१ शिवानी - प्रतिशोध (रथ्या) - पृ.सं.११० ।

२ शिवानी - मरण सागर पारे (रथ्या) - पृ.सं.१११ ।

समाचार-पत्रों में चर्चा शुरू होती है । सौदामिनी अपने पति की खूब भर्त्सना करती है फिर भी वह उसे उस काण्ड से बचाती है । उसके बाद सौदामिनी उससे बोलचाल बंद कर देती है ।

इस कहानी से एक बात तो स्पष्ट हो जाती है कि सौदामिनी महत्वाकांक्षिणी स्त्री है फिर भी वह अपने परिवार अर्थात पति और पुत्री के प्रति अप्रामाणिक नहीं है । भले ही उसने अपनी गृहस्थी के लिए सास-ससुर तक को दूर धकेल दिया । इसीलिए वह अपने पति की ` इस ` बात को बरदाश्त नहीं करती और जिस ` शिखा ` को उसके कहने पर भी शंकर नहीं काट सका था और जिसे विदेशों में भी स्वाभिमानपूर्वक अपने सिर पर शंकर ने सम्भालकर सुरक्षित रखा था उस शिखा को काटकर सौदामिनी ` प्रतिशोध ` लेती है और कहती है -- ` पाखंडी देखो, मैंने आज तुम्हारा आखिरी मुखौटा भी उतार दिया है । ` [1]

मरण सागर पारे --

नायिका का ` मातृरूप ` चित्रित करनेवाली यह कहानी है । इस कहानी की नायिका ` बसंतीदीदी ` लेखिका की एकमात्र ननद की जिठानी । उसके बारे में लेखिका के ये शब्द सही साबित होते हैं -- ` जिसका हृदय निष्कपट है उसका चित्र भी अवश्य ही उतना ही स्वाभाविक अर्थात अन्तरंग और बहिरंग समान रूप से उज्ज्वल । ` [2]

बसंती दीदी के संस्मरण प्रस्तुत करते समय लेखिका के अन्त:चक्षुओं के सम्मुख एक-एक स्मृति हरी-भरी हो जाती है । बसंती दीदी का घर कितने ही अनाथ भानजे-भतिजियों, आत्मीय-अनात्मीयों के कलकंठ से पूरा घर गूंज उठता था । उन्होंने सब को पाला पोसा उनके विवाह किए । उनकी आँखों के सम्मुख कितनी ही मौतें हुई । वे मौत को पहचानती थी इसीलिए जब वह लेखिका के पति की मृत्यु की आहट

---

१ शिवानी - प्रतिशोध (रथ्या) - पृ.सं.११० ।

२ शिवानी - मरण सागर पारे (रथ्या) - पृ.सं.१११ ।

समझाती हैं तो लेखिका काँप उठती हैं --` मृत्यु से जिसका परिचय इतना घनिष्ट था, उस छलनामयी की पदचाप को जिसने एक नहीं, अनेक बार सुना था, क्या वह कभी उसे पहचानने में भूल कर सकती थी ?` [१]

अपनी असंख्य सन्तानों में से अन्तिम अनाथा भतीजी का कन्यादान कर बसंतीदीदी ने अपने इन शब्दों का पालन किया --` इसे ब्याहकर गंगा नहा लूँ, फिर चैन से आँखें मूंद लूंगी ।` पर उनकी मृत्यु से उन उन्नीस सन्तानों को अनाथ किया, जिन्होंने अपनी जननी खोकर उस वात्सल्यमयी उदार नारी की गोद में खोई माँ का वात्सल्य पाया था । लेखिका कहती हैं, शायद ऐसे ही अमर प्राणों के लिए रवीन्द्रनाथ ने यह पंक्ति लिखी थी --

` मरण सागर पारे
तोमार अमर तोमादेर स्मरि ।`

- मरण-सागर के पार भी तुम अमर हो, हम तुम्हारा स्मरण करते हैं ।

(११) कहानी संग्रह - रतिविलाप
कुल कहानियाँ - ३
१. गजदन्त २. मित्र ३. अभिनय ।

(१) गजदन्त --

नायक प्रधान कहानी है ।` निम्मी ` सुंदर ,सुशील और सुगृहिणी होते हुए भी` गिरीन्द्र ` अपने प्रेम को धन की वेदी पर बली चढाता है और दो लम्बे लम्बे गजदन्तों वाली` बेबी ` से विवाह करता है तो लेखिका को आश्चर्य होता है । वे कहती हैं --` लक्ष्मी के कटाक्ष की महिमा आज इतने वर्षों बाद समझ पाई हूँ । चाहने पर, निश्चय ही श्रीपतिप्रिया, कामदेव के कठिन बाणों को भी व्यर्थ

---

१ शिवानी - मरण सागर पारे (रथ्या) - पृ.सं.१२० ।

सिध्द कर सकती है । ऐसा नहीं होता तो क्या उस विकट प्रणयज्वर का रोगी गिरीन्द्र घातक स्मरगरल पान कर भी, लक्ष्मी का वरद हस्त थामते ही ऐसे लहलहा उठता ? ` [१]

(२) मित्र: मध्यमवर्गीय गृहस्थ नायिका ` राधा ` को अपनी गृहस्थी का खटारा खींचते समय अपने पति के एक मित्र का आतिथ्य करने में उसे जो कठिनाइयाँ आती हैं और उनसे मुकाबला करते समय उसे जो झुंझलाहट होती है उसका चित्रण इस कहानी में हुआ है ।

(३) अभिनय :

भाभी और देवर के बीच अवैध संबंध के कारण नवविवाहिता देवरानी सुहागरात के पूर्व ही अपने मायके चली जाती है वह दुबारा लौटती ही नहीं । ` रजनी ` शेखर की भाभी है और ` जीवन्ती ` उसकी पत्नी । समय बीत जाने के बाद ` जीवन्ती ` एक महान अभिनेत्री बन जाती है । शेखर को पैसों की जरुरत पड़ने के कारण ` जीवन्ती ` के पास आता है । अचानक अपने पति को देखकर अपने जीवन में घटित उस दृश्य की स्मृति हरी भरी हो जाती है और वही ` सीन ` जो बारबार ` रिटेक ` होने के बावजूद भी सफल नहीं हो पा रहा था एकदम सफल हो जाता है । आज अपने चलचित्र-जगत के संक्षिप्त जीवन काल में वह पहली बार अभिनय नहीं कर रही थी । वह दृश्य था - ` सहसा नववधू चौंककर देखती है, वही नर्तकी शराब के नशे में चूर नौशे को अपने हाथ का सहारा देकर कार से उतार रही है । ` [२]

(१२) कहानी संग्रह - विषकन्या

कुल कहानियाँ - ५

१. ज्येष्ठा २. शपथ ३. घण्टा ४. के ५. पुष्पहार ।

---

१ शिवानी - गजदन्त (रतिविलाप) - पृ. सं. ३९ ।

२ शिवानी - अभिनय (रतिविलाप) - पृ. सं. ९४ ।

इनमें से ज्येष्ठा, शपथ, के और पुष्पहार इन कहानियों का ` मेरी प्रिय कहानियाँ ` इस कहानी संग्रह के अंतर्गत परिचय कराया गया है । अब ` घण्टा ` इस कहानी का हम परिचय प्राप्त करेंगे ।

घण्टा --

नायिका ` लक्ष्मी ` के द्वारा प्रेम के उदात्त रूप को साकार करनेवाली यह कहानी है । लक्ष्मी के जन्म से पहले ही अपने पुत्र देवेन्द्र के लिए देवेन्द्र की माँ ने लक्ष्मी का रिश्ता पक्का किया था । परंतु देवेंद्र अपनी पढाई पूर्ण करके बडी नौकरी प्राप्त करता है और अपने से चार साल बडी एक विजातीय लडकी ` सुस्ता ` से विवाह करता है । देवेन्द्र की माँ का तो देहान्त होता है और पिता, घर गाँव से भी उसका रिश्ता धीरे-धीरे समाप्त होता है । वह शहर में रहने लगता है ।

इधर लक्ष्मी का विवाह एक टी.बी. मरीज, दुहेजू ` रुद्रदत्त ` के साथ हो जाता है और तीसरे ही महीने चौदह वर्ष की विधवा लक्ष्मी फिर ननिहाल लौट आती है । देवेंद्र के बाबू (पिता) ही उसे पढा - लिखाकर अध्यापिका बनाते हैं । लक्ष्मी उनकी देखभाल करने लगती है ।

कुछ समय अनन्तर देबूदा कुछ सरकारी कामकाज के कारण अपने पिता के घर आते हैं । वहाँ लक्ष्मी उसका खूब आदर आतिथ्य करती है । देवेंद्र उसके सौन्दर्य से घायल हो जाता है और उसके हाथों से वह काम हो जाता है जो नहीं होना चाहिए था । फिर भी लक्ष्मी दूसरे दिन उसके रास्ते के लिए पूडी-शाक बनाती है ।

समय बीत जाता है । देवेन्द्र एक भयंकर बीमारी से मरते मरते बच जाता है । इसी दरम्यान अपने दफ्तर में लक्ष्मी के अकस्मात आगमन से देवेन्द्र आश्चर्यचकित हो जाता है और अपनी गलती के संभाव्य डर से अपने पारिवारिक सुख को मानो ग्रहण लग गया ऐसा उसे लगता है ।

परंतु लक्ष्मी उसके पास किसी शिकवे-शिकायत अथवा पैसों की माँग लेकर नहीं आती है । वह कहती है -- ` मुझे भवाली के गोल्थान में एक घण्टा

चढाना है, आपकी बीमारी में मनौती मानी थी । सबने कहा, यहाँ अच्छे दामों में बढिया घण्टा मिल जाएगा । सोचा, आप इतने बडे अफसर हैं आपके कहने-सुनने से मुझे अच्छी चीज मिल जाएगी । वैसे भी अब तक मोल-तोल करना नहीं आया, ~~हमेशा~~ ठगी ही जाती हूँ देबू दा ....` १

(१३) कहानी संग्रह -- स्वयंसिध्दा

कुल कहानियाँ - ६

१.अपराजिता २.निर्वाण ३. सौत ४. तीन कन्या

५.चन्नी ६. तोमार जे दोखिन मुख

उपर्युक्त कहानियों में से `तीन कन्या`, `चन्नी `और` तोमार जे दोखिन मुख `इन कहानियों का परिचय` किशनुली `इस संग्रह के अंतर्गत कराया गया है । अत: यहाँ `अपराजिता`, `निर्वाण `और` सौत `इन कहानियों का परिचय प्राप्त करेंगे ।

(१) अपराजिता --

कहानी के शीर्षक से ही नायिका का स्वरुप स्पष्ट हो जाता है । `आरती सक्सेना` आबकारी विभाग की कलक्टर, जिसका नाम सुनकर कलुआ जैसा कुख्यात तस्कर भी भीगी बिल्ली बन जाता है । नारी अबला है इस बात को उसने गलत साबित कर दिया है । नाम का ग्रेजुएट उसका देहाती पति` रामभजन ` एक दिन एक ढोंगी गुरु के जाल में फँस जाता है । तब भी आरती पराजित नहीं होती है । एक पुरुष-सा ढाँढस उसके पास है जिससे वह अकेली कार लेकर जाती है और अपने पति को बीहड अरण्य में स्थित उसके दिगंबर गुरु के आश्रम से प्राप्त करके ही रहती है । इस तरह आरती सक्सेना अन्त तक `अपराजिता` बनी रहती है ।

---

१ शिवानी - घण्टा (विषकन्या) - पृ.सं.९९ ।

(२) निर्वाण --

एक असफल आंतर-प्रांतीय, आंतर-जातीय प्रेमविवाह की तथा एक ढोंगी महाराज के चक्कर में फँसकर अपनी गृहस्थी का सत्यानाश करनेवाली, `मनोरमा चोपडा` की यह कहानी है । मनोरमा चोपडा पहले आकाशवाणी केन्द्र की निवेदिका, बाद में टेलिविजन की अत्यंत लोकप्रिय तारिका अपने घर-गृहस्थी में अत्यंत सुखी थी । फिर भी एक दिन वह अपने एक सिध्दी-प्राप्त गुरु के साथ भाग जाती है । कुछ दिन पश्चात देश के प्रमुख समाचार पत्र उसके गुरुदेव की धज्जियाँ उडाकर रख देते है । कभी इन्हीं अखबारों में उनके भक्त पत्रकारों ने उनकी प्रशंसा में कलम तोडकर रख दी थी । आज वही लेखनी विमुख होकर उनके लिए आग उगलने लगती है । उनकी तस्करी की कहानियाँ भोली-भाली युवतियों को ही नहीं, अनेक सुशिक्षिता आधुनिकाओं को भी अपने सम्मोहन पाश में बाँधने का रंगीन विवरण,....लूपाट पढकर भी लेखिका को अधूरा ही लगता है, क्योंकि गुरुदेव की जिस शिष्या ने, उन्हें अपनी दीक्षा की सबसे गहरी दक्षिणा दी थी, उस अभागिनी का नाम लेखिका को ढूँढने पर भी नहीं मिलता है । शीर्षक से यह संकेत मिलता है कि वह अब इस दुनिया में नहीं रही है महाराज के तथाकथित शब्दों में उसका `निर्वाण` हो चुका है ।

(३) सौत :

अपनी गृहस्थी में अपनी प्रतिवेशिनी `राज्यम्` का बिना रोक-टोक के प्रवेश भोली भाली `नीरा` के लिए बहुत महँगा पडता है । लेखिका स्वयं एक बार नीरा को चेतावनी देती है -- `तुम्हारी सखी से तुम्हारी मैत्री देखकर बडा आनन्द आया, किन्तु एक अंग्रेजी कहावत सुनी है ? `अन्तरंगता घृणा की जननी होती है, इसे मत भूलना, नीरा ।`[१] परंतु नीरा फिर भी बेखबर रहती है और राज्यम् नीरा के पति `महेश` को लेकर मद्रास भाग जाती है ।

---

१ शिवानी - सौत (स्वयंसिध्दा) - पृ.सं.८२ ।

उपसंहार

अपराधिनी, गैंडा, कैंजा, किशनुली, कृष्णवेणी, माणिक, मेरी प्रिय कहानियाँ, पूतोंवाली, पुष्पहार, रथ्या, रतिविलाप, विषकन्या और स्वयंसिद्धा इन १३ पुस्तकों में संग्रहित शिवानी की कुल ५८ कहानियों का परिचय प्राप्त करने के बाद मैं निम्नलिखित निष्कर्षोंपर पहुँच गया हूँ ।

१. मूल, मसीहा, तोमार जे दोखिन मुख, कालू, चार दिन की, दादा मियाँ और मेरा भाई इन कहानियों को छोडकर बाकी सब कहानियाँ नायिका-प्रधान कहानियाँ हैं ।

२. कहानियों के शीर्षक भी कहानी के नायिका-प्रधान होने का संकेत करते हैं । जैसे-चाँद, भीलनी, चलोगी चन्द्रिका, भिक्षुणी, मौसी, चन्नी, लाटी आदि ।

३. काम-शास्त्र, नाट्य-शास्त्र और काव्य-शास्त्र की नायिका-भेद परम्परा का अनुसरण भी नायिकाओं के चरित्र-चित्रण में पाया गया है । पद्मीनी, चित्रिणी नायिकाओंके साथ स्वकीया, परकीया और सामान्या तथा मुग्धा, मध्या और प्रौढा नायिकाओं के प्रचुर मात्रा में उदाहरण प्राप्त होते हैं । प्रौढा नायिकाएँ-प्राध्यापिका अनुराधा पटेल, कमला और क्रिश्चियाना वैरानिका का चित्रण मन का प्रहरी, के और तोप इन कहानियों में हुआ है । ` विप्रलब्धा ` शीर्षक की कहानी तो नायिका-भेद परम्परा का एक उत्तम उदाहरण है ।

४. नायिकाओं के आधुनिक रूप भी इन कहानियों में साकार हुए हैं । माता, भगिनी, बहू-सास, दादी इन अवासनात्मक नायिकाओं के साथ पत्नी, प्रेमिका तथा वेश्याओं के चरित्र भी इन कहानियों में चित्रित हुए हैं । तीर्थस्थल में किया हुआ पाप पाप नहीं होता उसी तरह पहाड की पतिता भी त्याग का ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत करती हैं -- शिवानी की ` करिए छिमा ` इस कहानी में ।

५. इनकी कहानियाँ नायिका-प्रधान होने के कारण नायिकाओं की विभिन्न समस्याएँ - पारिवारिक, दाम्पत्य जीवन की, दहेज, अवैध सम्बन्ध, भ्रूण-हत्या, पुनर्विवाह, अनमेल विवाह, विवाह विच्छेद, अशिक्षा, अंधश्रध्दा, दरिद्रता, आभूषण-प्रियता, विलासप्रियता, प्रौढ कुमारिकाओं की समस्याएँ आदि समस्याओं का इनमें चित्रण हुआ हैं। जैसे आभूषणों के प्रति मोह के कारण अपने ही घर में चोरी करने के लिए प्रवृत्त नायिका की कहानी हैं --` अपराधी कौन ? ` तो नारी के महत्वाकांक्षिणी होने के कारण उत्पन्न समस्या का चित्रण ` शर्त ` और ` प्रतिशोध ` कहानी में हुआ है।

६. इन कहानियों में न केवल समस्याओं का चित्रण हुआ हैं अपितु इन समस्याओं पर कहानियों की नायिकाओं ने अपनी अपनी दृष्टि से समाधान भी प्रस्तुत किया हैं। ` तर्पण ` कहानी में बलात्कारिता पुष्पा पन्त ने अपने सर्वस्व का विनाश करनेवाले दुष्ट की बीस वर्षों बाद एक समारोह में हत्या कर डाली हैं। तो ` करिए छिमा ` की नायिका ने अपने प्रेमी की प्रतिष्ठा पर आँच नहीं आने दी हैं, स्वयं अपने हाथों से नवजात शिशु की हत्या की हैं।

संक्षेप में शिवानी की कहानियाँ नायिका-प्रधान हैं और उनमें नायिकाओं के विभिन्न रूपों के साथ-साथ उनकी समस्याओं का चित्रण एवं उनका समाधान भी प्रस्तुत किया गया हैं।